विश्वविज्ञान वेदशास्त्र

विनोद कुमार शर्मा

वेद विश्व विज्ञान है। विश्व अग्नि-सोमात्मक है। विश्व के आरम्भक अग्निसोमस्वरूप ब्रह्मविषयक दिव्यविज्ञान का उपायशास्त्र ब्रह्म है और यह विज्ञान का उपाय ब्रह्म परोक्ष तत्वों के द्रष्टा महर्षियों में स्वयं प्रादुर्भुत हुआ। वह वेद है। अभियुक्तो (आप्त पुरुषों) ने कहा है–

युक्तैः–

युगान्तेऽन्तर्हितान् देवान् सेतिहासान् महर्षयः।
लेभिरे तपस्या पूर्वमनुज्ञाताः स्वयंभुवा।।

क्षीणायुषः क्षीणसत्वान् दुर्येधान् वीक्ष्य कालतः। (मनुः)
वेदान् महर्षयो व्यस्यन् हृदिस्याऽच्युतनोदिताः।। (भागवते)

अनागतमतीतं च वर्तमानतीमीन्द्रियम्।
विप्रकृष्टं व्यवहितं सम्यक् पश्यन्ति योगिनः।। (भागवते)

आविर्भूतप्रकाशानामनुपप्लुतचेतसाम्।
अतीतानागतज्ञानं प्रत्यक्षात्र विशिष्यते।।

अतीन्द्रियानसंवेद्यान् पश्यन्त्यार्षेण चक्षुषा।
ये भावान् वचनं तेषां नानुमानेन बाध्यते।। (भर्तृहरिः)

पहले स्वयंभू के द्वारा अनुज्ञाप्राप्त महर्षियों ने कालक्रम से अन्तर्हित इतिहास सहित वेदों को क्षीणायु, क्षीणबल और दुबोध जानकर तपोबल के द्वारा युगान्त में प्राप्त किया। (मनु)। हृदय में स्थित अच्युत (भगवान विष्णु) के द्वारा प्रेरित महर्षियों ने वेदार्थ का निर्णय किया। (भागवत) योगिजन भूत, भविष्य, वर्तमान, अतीन्द्रिय, दूरस्थ, व्यवधानयुक्त वस्तु का सम्यक् ज्ञान करते हैं। (भागवत)

जिनके चित रजोगुण और तमोगुण से अभिभूत नहीं है, जिन्हें (तप के कारण क्षीण कल्मष होने से) आवरण रहित (विपर्ययरहित) ज्ञान हो गया है उन महर्षियों को जो भूत और भविष्यत् का ज्ञान होता है, वह अस्मदादि प्रत्यक्ष से विलक्षण नहीं होता। (अर्थात् लौकिक प्रत्यक्ष की तरह प्रत्यक्ष होता है।)
(वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, कारिका 35-38)

पुस्तकालय प्रभारी,
पद्म श्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर